प्रकाशक/स्वामीत्व
रजनी (पुत्री-महेश धावनिया)

डाक पंजियन संख्या : JaipurCity/423/2017-19

श्री बाबा

प्रधान कार्यालय-सी-57, महेश नगर, जयपुर-15, मो.-9928260244 हिन्दी मासिक समाचार पत्र 7073909291 E-mail:shreebaba_2008@yahoo.com

वर्ष : 12 अंक : 9 आर.एन.आई. नं. : RAJHIN/2008/24962 जयपुर, 5 नवम्बर, 2019 मूल्य : 5 रुपए प्रति पृष्ठ : 4

सीएम से मिल पूनियां ने दी दत्तोपंत ठेंगड़ी की पुस्तक बोले शिष्टाचार भेंट थी, गहलोत की तारीफ भी की

जयपुर। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मुख्यमंत्री आवास पर मिलने पहुंचे। पूनियां

ने बताया कि दीपावली के अवसर पर शुभकामनाएं देने के लिए वे गहलोत से मिलने गए थे। इस दौरान उन्होंने गहलोत को दत्तोपंत ठेंगड़ी द्वारा लिखित पुस्तक डॉ. अंबेडकर एवं सामाजिक क्रांति तथा दीनदयालजी को जानो, भेंट की। हालांकि पूनियां ने इसे शिष्टाचार भेंट बताते हुए सीएम अशोक गहलोत की तारीफ की।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में राजनैतिक सौहार्द की परंपरा रही है। उन्होंने कहा कि वैचारिक मतभेदों का असर व्यक्तिगत संबंधों पर नहीं होता। हालांकि पूनियां और गहलोत की इस मुलाकात के कई राजनैतिक मायने भी निकाले जाने लगे हैं। विपक्षी पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष का सीएम से मिलने का इस तरह का संभवतया पहला उदाहरण है। पार्टी के एक पदाधिकारी का कहना है कि ज्ञापन देने के लिए सीएम से मुलाकात होती है लेकिन शिष्टाचार मुलाकात के उदाहरण कम ही देखने को मिले हैं।

138 जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्मेलन 8 नवम्बर को

जयपुर। न्यू जागृति सामाजिक सेवा संस्थान की ओर से 138 जोड़ों का सर्वधर्म

सामूहिक विवाह सम्मेलन 8, नवम्बर, 2019 (देवउठनी एकादशी) को शीतला माता चाकसू में होने जा रहा है इस अवसर पर समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री सतीश पूनियां शिरकत करेंगे। ऐसे परिवार जो अपनी बेटी की शादी का खर्चा उठाने में असमर्थ हैं वह अपनी मर्जी से बेटी का रिश्ता करने के बाद निचे दिए गए हैं नंबर पर सम्पर्क करे शादी पुरा खर्च न्यू जागृति सामाजिक सेवा संस्थान की ओर से किए जायेगा व हर लाडली बेटी का नया जीवन शुरू करने के लिए संस्थान की ओर से विशेष उपहार में 100 वर्ग गज भूमि व 1 लाख रुपए मूल्य करीब का घर उपयोगी सामान उपहार स्वरूप दिया जायेगा। **मो. 8187877778**

राज्यपाल कलराज मिश्र ने पुष्पगुच्छ पर जताया एतराज, सूत की माला सम्मान के लिए काफी

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र

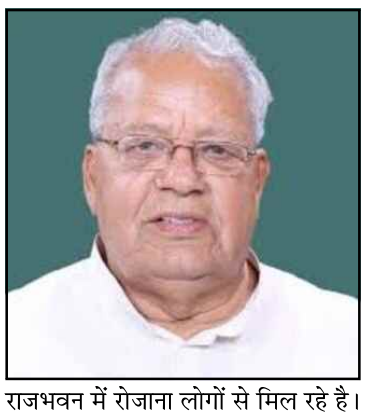

राजभवन में रोजाना लोगों से मिल रहे है। लोगों से होने वाली मुलाकातों में उन्होंने पुष्पगुच्छ (फ्लावर बुके) लाने पर एतराज जताया है। वह चाहते है कि लोग सम्मान के रूप में एक फूल या सूत की माला लेकर मिलेंगे तो उन्हें और अच्छा लगेगा। राज्यपाल से मिलने वाले लोगों में जनप्रतिनिधि राजनीतिज्ञ प्रशासनिक अधिकारी और आमजन शामिल हैं।

मिलने वाले अधिकांश लोग फ्लावर बुके भेंट करते है। इस पर राज्यपाल ने ये बात कही है। उन्होंने कहा कि अपेक्षा है कि लोग मेरी इस बात को फॉलों करेंगे और सम्मान के रूप में एक फूल या सूत की माला लेकर ही मिलेंगे।

जाटव समाज मृतक परिजनों को 25 लाख आश्रितों को सरकारी नौकरी की मांग पर अड़ा

जयपुर। अलीपुरा में दीपावली के दिन हुए दो पक्षों में खूनी संघर्ष में वृद्ध दंपत्ति की हुई मौत का मामला अभी तक सुलझ नहीं पाया है। हालांकि अलीपुरा में दोनों पक्षों से पुलिस की ओर से समझाइश के बाद माहौल शांतिपूर्ण है, लेकिन जाटव समाज के लोग अपनी मांगों को लेकर अडिग हैं।

यही कारण है कि जयपुर के एसएमएस अस्पताल में रखे महिला के शव को 60 घंटे बाद भी परिजनों की ओर से नहीं उठाया गया हैं। जाटव समाज के पदाधिकारियों की मांग है कि मृतक को 25-25 लाख, आश्रित को सरकारी नौकरी व घायल को 10-10 लाख रुपए की आर्थिक सहायता की मांग कर रहे हैं। दिनांक 30.10.2019 को भी जयपुर में गृह राज्यमंत्री भजनलाल जाटव के निवास पर अखिल राजस्थान जाटव महासभा के पदाधिकारियों के साथ वार्ता हुई थी, लेकिन वार्ता में मांगों को लेकर सहमति नहीं बन पायी थी। इस पर गुरुवार को सुबह पदाधिकारी दोबारा वार्ता के लिए गृह राज्यमंत्री के निवास पर पहुंचे, लेकिन भजनलाल जाटव सुबह ही चित्तौडगढ चुनावी कार्य से चले गए थे। ऐसे में गुरुवार को वार्ता नहीं हो सकी।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की समीक्षा बैठक

जल्द शुरु करें पत्रकार पेंशन सम्मान योजनाः गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है। पत्रकारों के हितों की रक्षा के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने पिछले कार्यकाल में वरिष्ठ अधिस्वीकृत पत्रकार पेंशन (सम्मान) योजना शुरू की थी। बाद में इसे बंद कर दिया गया। उन्होंने निर्देश दिए कि बजट घोषणा के अनुरूप इसे नए रूप में शीघ्र शुरू किया जाए। श्री गहलोत मुख्यमंत्री कार्यालय में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की समीक्षा बैठक ले रहे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में मेरे पहले कार्यकाल में हमारी सरकार ने राजस्थान पत्रकार-साहित्यकार कल्याण कोष का गठन किया था। अधिक से अधिक पत्रकारों एवं साहित्यकारों को इस कोष का लाभ मिल सके, इसके लिए सरकार ने इस कोष में इस वर्ष के बजट में 2 करोड़ रूपए देने की घोषणा की है।

मुख्यमंत्री ने अधिस्वीकृत पत्रकारों को आर्थिक सहायता, मेडिक्लेम पॉलिसी, मेडिकल डायरी, राजस्थान रोडवेज की बसों में निशुल्क यात्रा जैसी सुविधाओं को भी और सुदृढ़ बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने जयपुर सहित प्रदेशभर में अधिस्वीकृत पत्रकारों के लिए आवासीय कॉलोनी की योजना पर कार्य करने के निर्देश दिए। गहलोत ने कहा कि प्रचार-प्रसार के कार्य में 'राजस्थान संवाद' की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे और अधिक प्रभावी बनाया जाए। उन्होंने इसकी प्रबंध समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रभावी प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जाए। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ सोशल एवं डिजिटल मीडिया के माध्यम से सरकार की योजनाओं एवं फैसलों का व्यापक प्रसार किया जाए। बैठक में सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा सहित सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग तथा जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारी मौजूद थे।

सचिवालय में राजनीतिक नियुक्तियां शीघ्र

जयपुर। 70 साल के इतिहास में सचिवालय में महात्मा गांधी की मूर्ति तो लगी थी, लेकिन गांधी के विचारों को प्रदेश के हर जिले तक पहुंचाने वाला विभाग कभी नहीं खुला।

इस साल महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर अशोक गहलोत सरकार सचिवालय में सरकारी खर्चे से शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ और गांधी संस्थान खोलने जा रही है। इसके लिए देश के नामी गांधी विचारकों को राजनीतिक नियुक्ति के तहत जल्द शामिल किया जाएगा। इसकी शुरूआत गुरुवार को सचिवालय के उत्तर-पश्चिमी भवन में कक्ष संख्या 8333 से की गई। इस भवन को शांति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ के दफ्तर के लिए आवंटित किया गया। इसी कक्ष से गांधी संस्थान का काम पूरे प्रदेश में फैलाया जाएगा। इतना ही नहीं इस संस्थान में सरकारी ऐसी हस्तियों को शामिल करने जा रही है जो पिछली भाजपा सरकार के समय सीएम की एडवाइजरी बॉडी हुआ करती थी। ये प्रबुद्ध गांधीवादी विचारक सरकार के सलाहकार के रूप में भी काम करेंगे। लिहाजा कक्ष आवंटन के साथ ही माना जा रहा है कि अगले एक-दो सप्ताह में प्रदेश में गांधीवादी विचारकों को सरकारी सलाहकार बनाने के साथ अन्य राजनीतिक नियुक्तियों का सिलसिला शुरू हो जाएगा। निकाय चुनाव क्षेत्र विशेष के होने के कारण इस दौरान प्रदेश को प्रभावित करने वाली राजनीतिक नियुक्तियों पर रोक नहीं रहती है। कुछ माह पहले सीएम अशोक गहलोत ने जयपुर में 50 करोड़ की लागत से महात्मा गांधी संस्थान की स्थापना करने की घोषणा की थी। उन्होंने गांधी की 150वीं जयंती के आयोजनों की अवधि को एक साल और बढ़ाने के साथ ही प्रदेश में एक शांति और अहिंसा प्रकोष्ठ का गठन करने की घोषणा की। युवा पीढ़ी को गांधी दर्शन से परिचित कराने के लिए सरकार के संस्थागत प्रयास के तहत अहमदाबाद के साबरमति आश्रम और वर्धा के सेवाग्राम की तर्ज पर यह संस्थान बनाया जाएगा। इसमें एक भव्य **(शेष पृष्ठ 4 पर)**

डॉ. अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र चालू करवाने की मांग

जयपुर। पूर्व आईएएस लालचंद असवाल ने मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर डॉ. अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय (डॉ. अम्बेडकर पीठ) शैक्षणिक सत्र शुरू करवाने की मांग की है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पिछले कार्यकाल में 6 विश्विद्यालयों की घोषणा की गई थी, 5 का शैक्षणिक सत्र उसी वक्त प्रारम्भ हो गया। उन्होंने कहा कि जन-घोषणा पत्र में घोषणा की गई थी कि डॉ. अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय और हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय का शुभारम्भ किया जाएगा, हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय शुरू हो गया लेकिन डॉ. अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय की शुरूआत नहीं हो पाई है।

समाचार विज्ञापन संकलन

श्री बाबा समाचार पत्र की प्रकाशन तिथि प्रत्येक माह की 5 तारीख है। अतः समाचार एवं विज्ञापन आदि के प्रकाशन के लिए विज्ञप्ति, फोटो आदि सामग्री माह की 20 तारीख तक पूर्ण विवरण के साथ भिजवा दें। सम्पर्क करें:

श्री बाबा whatsapp **7073909291**

सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15

मो.-9928260244 E-mail : shreebaba_2008@yahoo.com

यादव ने सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग में अतिरिक्त निदेशक का पदभार संभाला

जयपुर। राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी राजपाल सिंह यादव ने अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) एवं पदेन संयुक्त शासन सचिव सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग में कार्य ग्रहण कर लिया। यादव इससे पूर्व उपायुक्त सी.ए.डी., आई.जी.एन.पी. बीकानेर में कार्यरत थे।

सम्पादकीय

व्हाट्सऐप जासूसी

अभिव्यक्ति और निजता के बुनियादी लोकतांत्रिक अधिकारों को लेकर तरह-तरह की आशंकाओं के बीच व्हाट्सऐप जासूसी का नया खुलासा बेहद चिंताजनक है। फोन और मोबाइल पर बातचीत टेप करने के वैध-अवैध उदाहरण तो लगातार रहे हैं और इनमें सरकारी एजेंसियों की ही भागदारी भी रही है। सरकारी एजेंसियां अमूमन इसे देशहित में आतंकी और आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश रखने के लिहाज से जायज ठहराती रही हैं। लेकिन अदालतें बार-बार हिदायत देती रही हैं कि इसके बहाने व्यक्ति के अभिव्यक्ति और निजता के अधिकारों का हनन नहीं होना चाहिए। ऐसे दौर में व्हाट्सऐप भरोसा दिलाता रहा है कि उस पर की गई बातचीत या भेजे गए मैसेज सुरक्षित हैं। लेकिन अब पता चल रहा है कि इस्त्राइली कंपनी एनएसओ के स्पाइवेअर पीगासस के जरिए व्हाट्सऐप की बातचीत और मैसेज को टैप किया जाता रहा है। फिलहाल इस जासूसी के दायरे में जिन तकरीबन 1400 लोगों के नाम आए हैं, उनमें 1200 तो भारत के ही हैं। और जरा यह गौर कीजिए कि भारत में किन लोगों को निशाना बनाया गया है। इनमें ज्यादातर मानवाधिकार कार्यकर्ता, वकील, बुद्धिजीवी और पत्रकार हैं।

मानवाधिकार कार्यकर्ता, वकील और बुद्धिजीवी भी ऐसे जो आदिवासियों और दलित अधिकारों के लिए सक्रिय रहते हैं और पत्रकार भी वे जो रक्षा मामलों पर नजर रखते हैं या स्वतंत्र विचारों के लिए जाने जाते हैं। भीमा-कोरेगांव मामले और ऐसे ही अन्य मामलों को याद करें तो स्पष्ट हो सकता है कि शक की सूई किस ओर इशारा करती है। हालांकि सरकार ने व्हाट्सऐप से इसकी जबावदेही मांगी है। लेकिन इस्त्राइली कंपनी का कहना है कि वह इस स्पाइवेअर को सिर्फ और सिर्फ सरकारी एजेंसियों को ही बेचती है। ऐसे में सरकार को भी अपनी जवाबदेही स्पष्ट करनी चाहिए। सवाल है कि बौद्धिक, पत्रकार या मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की भी निजता और अभिव्यक्ति की आजादी सुरक्षित नहीं रहेगी तो लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास होना अनिवार्य है। फिर, सर्वोच्च अदालत ने पिछले साल ''आधार' से जुड़े फैसले में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकारों की श्रेणी में डालकर ''आधार' के इस्तेमाल को सिर्फ सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तक सीमित कर दिया था। यानी ऐसे अधिकारों का हनन न हो, यह देखना सरकार की जिम्मेदारी बनती है। निश्चित रूप से अदालतों को स्वत: संज्ञान लेना चाहिए।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता

100 रुपए

विशिष्ट द्विवार्षिक सदस्यता

500 रुपए

साथ में पाएं दो वैवाहिक एवं एक क्लासीफाइड डिस्प्ले विज्ञापन बिल्कुल मुफ्त

आजीवन सदस्यता

2100 रुपए

संरक्षक सदस्यता

5100 रुपए

बाबा साहब के कारवां से तात्पर्य

आज बाबा साहब के कारवां को आगे ले जाने का काम तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग विभिन्न संस्थानों के माध्यम से कर रहा है। इनकी कार्यशैली मंचीय है। मंचीय प्रोग्राम आवश्यक रूप से एक मार्गीय होते हैं। वक्ता भाषण देता है उस भाषण की प्रमाणिकता कभी सिद्ध नहीं होती। ताली बजती है, धन्यवाद ज्ञापित होता है और प्रोग्राम समाप्त।

कहा जाता है कि अच्छी तरह से परिभाषित समस्या में ही समाधान छुपा हुआ रहता है। बाबा साहब ने हमारी मानवीय समस्याओं का विश्लेषण किया, उनकी पहचान की तथा समाधान भी सुझाए। हमारे कल्याण के लिए उन्होंने संदेश दिया- ''मैंने तुम्हारे लिए जो कुछ भी किया है वह बेहद मुश्किलों, असहनीय दु:खों और बेशुमार विरोधियों का मुकाबला करके किया है। यह कारवां आज जिस जगह पर है इसे हमेशा आगे ही बढ़ाते रहें, चाहे कितनी ही रूकावटे क्यों न आएं। यदि मेरे सिपहसालार उसे आगे न बढ़ा सके तो उसे यही छोड़ दें परन्तु किसी भी हालत में इसे पीछे न जाने दें। आप लोगों को मेरा यही अंतिम संदेश है।'' यह मात्र एक कथन ही नहीं था बल्कि एक महामानव का मूलवासियों बहुजनों के लिए सलाह, आदेश तथा कारवां को आगे ले जाना का मंत्र भी था। इस कथन से चार बातें स्पष्ट रूप से उभर कर आती है। पहली, यह कारवां क्या था? दूसरी यहां तक पहुंचने का मार्ग तथा तीसरी बात उसको आगे ले जाने की योग्यता एवं कार्यक्रम क्या थे। ''यदि मेरे ... तो इसे यही छोड़ दें ...'' से यह भी स्पष्ट होता है कि बाबा साहब को बहुजनों को समर्थ पर संदेह था। बाबा साहब के कारवां से तात्पर्य उनके द्वारा चलाएं गए आंदोलन के मुख्य उद्देश्य

से था। यहां यह बात साफ करनी होगी कि बाबा साहब ने अपना आंदोलन किसी अन्य वर्ग के साथ मिलकर नहीं चलाया बल्कि स्वतंत्र रूप से चलाया था। यह आंदोलन मूलनिवासी, बहुजनों के लिए तथा बहुजनों द्वारा चलाया गया स्वतंत्र आंदोलन था।

बाबा साहब से पहले बहुजन जानवरों से भी बदत्तर स्थिति में थे। वो अधिकार विहीन गुलाम थे। बाबा साहब ने ही अन्याय के विरोध की भावना का निर्माण किया तथा संघर्ष का रास्ता सिखाया। विधायिका एवं सरकारी नौकरियों में आरक्षण के माध्यम से अछूतों का राजनीति एवं प्रशासन में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित् किया, शिक्षा के लिए सदियों से बंद पड़े दरवाजों की तलाश तोड़कर अछूतों के लिए खोल दिए तथा अन्त में संघर्ष का मार्ग अपनाकर सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में क्रान्ति का आगाज किया। 24 सितम्बर 1944 को मद्रास में बाबा साहब ने अपने राजनैतिक लक्ष्य के बारे में कहा था ''हमारा अंतिम लक्ष्य इस देश के लिए शासक बनना है। जाईए इस लक्ष्य को अपने घरों की दीवारों पर लिख दो ताकि कभी भूल न सके। हमारी लड़ाई कुछ नौकरियों एवं सहूलियतों के लिए नहीं है परन्तु हमारा लक्ष्य बड़ा है वह लक्ष्य इस देश का शासक बनने का है।'' उनका मानना था कि राजनैतिक सत्ता वह मास्टर चॉबी है जिसके विकास के सभी ताले खोले जा सकते हैं। संघर्ष के बारे में कहा ''हमारा संघर्ष केवल सत्ता और सम्पत्ति के लिए नहीं है बल्कि सामाजिक स्वतंत्रता एवं आत्म सम्मान के लिए है।'' कांग्रेस की राजनैतिक सुधार एवं स्वराज्य की मांग के संदर्भ में बाबा साहब का स्पष्ट मत था कि राजनैतिक स्वतंत्रता से यह सामाजिक स्वतंत्रता जरूरी है बिना सामाजिक सुधारों के स्वराज्य बेमानी होगा। बाबा साहब के विचारों एवं आंदोलनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि उनके आंदोनल धार्मिक गुलामी, अमानवीय सामाजिक व्यवस्था (जातिवाद),स्त्री पराधीनता, रूढिवाद एवं सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ थे। राजनैतिक सत्ता तो केवल माध्यम था उन महान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, जिनके कि वो हिमायती थे।

संक्षेप में बाबा साहब के आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ''नवजागरण'' अर्थात् संपूर्ण सामाजिक परिवर्तन था। और बाबा इस नवजागरण अर्थात् कारवां को यहां तक कैसे लेकर आएं। **क्रमश:**

वैवाहिक

वर चाहिए

* टोंक निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., वर्तमान में प्राईवेट नौकरी दिल्ली में, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नागरवाल, लोदवाल, मरमट।
* दौसा निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., एम.बी.ए., फैशन डिजाईनर, पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-मीमरोट, माली, गोठवाल।
* जयपुर निवासी, 30 वर्ष (विधवा), शिक्षा-एम.ए., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-नागरवाल, गुमलाडू, मेहरा।
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष (विधवा), शिक्षा-एम.ए., वर्तमान में जी.एन.एम., गौत्र-कुण्डारा, कारौल्या, मरमट, सामने नागरवाल न हो, मो. 9887078013
* जयपुर निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-सुलानिया, मरमठ, गोठवाल और सामने महर ना हो, मो. 9928260244
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-लोदवाल, रणिजवाल, बंशीवाल, सामने कुण्डारा न हो, मो. 9413283476
* जयपुर निवासी, 29 वर्ष, शिक्षा-बीए..ए., पिता-निजी कार्य, गौत्र-मिमरोट, गोठवाल, कालरवाल, बैण्डवाल, सामने जारवाल न हो, मो. 8058791025
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-एम.कॉम., पिता-राजकीय सेवा, गौत्र-लकवाल, रेसवाल, मिमरोठ, सामने बंशीवाल न हो।
* जयपुर निवासी, 28 वर्ष, शिक्षा-एम.बी.बी.एस., एम.एस. ई.एन.टी. एस.एम.एस. जयपुर, पिता-एडवोकेट, गौत्र-भेरवाल, मिमरोठ, जोनवाल, मो. 7073909291
* जयपुर निवासी, 23 वर्ष, शिक्षा-एम.कॉम., पिता-निजी कार्य, गौत्र-गंगवाल, गोगडिया, लोदवाल, सिवतिया, सामने चरावंडिया न हो, मो. 9549367702
* जयपुर निवासी, 20 वर्ष, शिक्षा-एम.कॉम., पिता-निजी कार्य, गौत्र-गंगवाल, गोगडिया, लोदवाल, सिवतिया, सामने चरावंडिया न हो, मो. 9549367702

वधू चाहिए

* टोंक निवासी, 34 वर्ष, शिक्षा-एम.एस.डब्ल्यू, वर्तमान में संविधाकर्मी लेबर डिपार्टमेंट, मासिक आय- 25000 रुपये, पिता निजी कार्य, गौत्र-लोदवाल, बड़ोदिया, रेणिवाल, परालिया।
* जयपुर निवासी, 31 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., टेट, रीट, पिता राजकीय सेवा, गौत्र-लोदवाल, जाटवा, गंगवाल।
* टोंक निवासी, 32 वर्ष, शिक्षा-12वीं पास, वर्तमान में राजकीय सेवा (फॉर्थ क्लास), गौत्र-चरांवडिया, गजरानिया, मेहरा, नागरवाल।
* टोंक निवासी, 35 वर्ष (तलाकशुदा), शिक्षा-बी.ए., वर्तमान में प्राईवेट जॉब, मासिक आय- 12 हजार रुपये, पिता निजी कार्य, गौत्र-जाटवा, उज्ज्वल, गोठवाल।
* फरीदाबाद निवासी, 30 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक. इलेक्ट्रीकल, वर्तमान में बिल्डर का कार्य, पिता निजी कार्य, गौत्र-मरमठ, जाटवा, मुराडी।
* जयपुर निवासी, 34 वर्ष, शिक्षा-एम.ए., वर्तमान में स्वयं का ज्वैलरी का कार्य, मासिक आय- एक लाख रुपये, पिता निजी कार्य, गौत्र-जोनवाल, कुवाल, लोदवाल, जाटवा, मो. 7073909291
* जयपुर निवासी, 36 वर्ष, (तलाक सुदा) शिक्षा-बी.एड., वर्तमान में टेलरिंग का कार्य, पिता निजी कार्य, गौत्र- गोठवाल, नागरवाल, मीमरोट, कुण्डारा।
* टोंक निवाई निवासी, 26 वर्ष, शिक्षा-एम.बी. आई.टी., वर्तमान में प्राईवेट कार्य, गौत्र-कुवाल मरमट, बीलवाल।
* लाखेरी निवासी, 27 वर्ष, शिक्षा-बी.टेक इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर, वर्तमान में आई.टी. कम्पनी में कार्यरत, पिता राजकीय सेवा, गौत्र-जाटवा, सीवतिया, टटवारिया, मो. 8580692811
* जयपुर निवासी, 34 वर्ष, (तलाक सुदा) शिक्षा-बी.ए., एम.ए., वर्तमान में सिस्टम इंजिनियर, गौत्र-भीमवाल, रेशवाल, मीमरोट, मो. 9950917562
* जयपुर निवासी, 31 वर्ष, शिक्षा-बी.ए., एम.ए., एम.बी.ए., एस.एस.सी. पास, पिता राजकीय सेवा, गौत्र-बंशीवाल, नागरवाल, सुलाणिया, सामने बैथेड़ा ना हो।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें, **मो.: 9928260244**

क्या-क्या और निगलेगा मोबाईल ?

बीस-बाईस साल पहले की बात है। तब मैं हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान, वाराणसी में पढ़ता था। जब कभी हमारी छुट्टी होती, हम घूमने निकल जाते। लहुराबीर, गौदोलया, गंगाघाट, रामनगर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, सारनाथ और आसपास की कितनी ही जगहें मैंने अकेले या दोस्तों के साथ घूमी और गंगा-स्नान तो बीसों बार किया। उस समय पढ़ाई के साथ-साथ घूमना-फिरना होता रहता था। यार-दोस्तों के साथ बैठ कर घण्टों बाते होती रहतीं। जब कभी घूमने नहीं जाता तो साहित्य में रुचि होने के कारण किताबें पढ़ता। लज्जा, शतरंज के मोहरे, प्रेमाश्रम, प्रेमचन्द की कहानियां, वयम् रक्षाम:, वैशाली की नगरवधु और भी अनेक कहानियां और उपन्यास मैंने इस दौरान ही पढ़े। साथ ही पढ़ाई भी चलती रही।

दूरसंचार विभाग, जिसे अब बीएसएनएल कहते हैं, के तब स्वर्णिम दिन थे। लगभग हर गली-चौराहे पर पीसीओ बूथ हुआ करता था और कई स्थानों पर तो सिक्का डालकर बात कराने वाला फोन होता था। पीसीओ से लोकल, राज्य के बाहर या अन्तरराष्ट्रीय कॉल कर सकते थे। कॉल लगते ही मीटर 3.26 रुपये बताता था और फिर हर दस सेकेण्ड के 1.26 रुपये के हिसाब से मीटर बढ़ता जाता था। जिस तरह आजकल मोबाइल पर घण्टों बातचीत कर लेते हैं वह तब संभव नहीं था। रात में पल्स बढ़ जाते थे, अत: बात करने के लिये रात का समय ही सर्वोत्तम होता था।

आज के बच्चों को देखता हूँ और अपनी तुलना करता हूँ तो अपने को हजार गुना बेहतर पाता हूँ और इनके हालात पर तरस खाता हूँ। न सामान्य जागरुकता, न आसपास की कोई जानकारी और न ही खेल-कूद; कुछ भी नहीं है इनके पास। मोबाइल नामक यंत्र ने इनका आधा जीवन छीन लिया है। आज इनके पास सब सुख-सुविधायें हैं, लेकिन किसी के लिये समय नहीं है। यह विडम्बना ही है कि मोबाइल से इतना समय बचता है लेकिन जिससे पूछो, उसके ही पास समय नहीं मिलता है। गोठ, सामूहिक मिलन, दोस्तों के साथ पिक्चर देखना और घूमना-फिरना गुजरे जमाने की बातें हो गईं हैं।

मोबाइल ने एक संचार क्रांति को जन्म दिया है। अब जो-जो कार्य मोबाइल सम्पादित करता है, उनकी लिस्ट बनाये तो वह काफी लम्बी हो जायेगी, अत: मोबाइल के आने से हमारे जीवन से क्या-क्या खत्म हो गया और कितने लोगों का रोजगार छिन गया, इस पर चर्चा करते है। बेशक रोजगार के नये क्षेत्र भी खुले हैं, परन्तु समाप्त अधिक हुए हैं और इलेक्ट्रॉनिक कबाड़ के ढेर बढ़े हैं।

क्रमश:

श्याम सुन्दर बैरवा
भीलवाड़ा

भारत में किस हाल में जी रहा है दलित समाज ?

आनंद तेलतुंबडे

दलित, जिन्हें पहले अछूत कहा जाता था, वो भारत की कुल आबादी का 16.6 फ़ीसद हैं. इन्हें अब सरकारी आंकड़ों में अनुसूचित जातियों के नाम से जाना जाता है. 1850 से 1936 तक ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार इन्हें दबे-कुचले वर्ग के नाम से बुलाती थी. अगर हम दो करोड़ दलित ईसाईयों और 10 करोड़ दलित मुसलमानों को भी जोड़ लें, तो भारत में दलितों की कुल आबादी करीब 32 करोड़ बैठती है.

ये भारत की कुल आबादी का एक चौथाई है. आधुनिक पूंजीवाद और साम्राज्यवादी शासन ने भारत की जातीय व्यवस्था पर तगड़े हमले किए. फिर भी, दलितों को इस व्यवस्था की बुनियादी ईंट की तरह हमेशा बचाकर, हिफ़ाज़त से रखा गया, ताकि जाति व्यवस्था ज़िंदा रहे. फलती-फूलती रहे. दलितों का इस्तमाल करके ही भारत के संविधान में भी जाति व्यवस्था को ज़िंदा रखा गया.

दलितों और मुसलमानों पर अलग से बात होना क्यों जरूरी ?

बंटे हुए हिंदू समाज का आइना हैं दलित

सभी दलितों के साथ भेदभाव होता है, उन्हें उनके हक से वंचित रखा जाता है. ये बात आम तौर पर दलितों के बारे में कही जाती रही है. लेकिन करीब से नजर डालें, तो दलित, ऊंच-नीच के दर्जे में बंटे हिंदू समाज का ही आईना हैं.

क्यों दलितों और सवर्णों के बीच टकराव बढ़ने की आशंका है ?

1931-32 में गोलमेज सम्मेलन के बाद जब ब्रिटिश शासकों ने समाज को सांप्रदायिक तौर पर बांटा तो, उन्होंने उस वक्त की अछूत जातियों के लिए अलग से एक अनुसूची बनाई, जिसमें इन जातियों का नाम डाला गया.

इन्हें प्रशासनिक सुविधा के लिए अनुसूचित जातियां कहा गया. आज़ादी के बाद के भारतीय संविधान में भी इस औपनिवेशिक व्यवस्था को बनाए रखा गया. इसके लिए संवैधानिक (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 जारी किया गया, जिसमें भारत के 29 राज्यों की 1108 जातियों के नाम शामिल किये गए थे. हालांकि ये तादाद अपने आप में काफी ज्यादा है.

फिर भी अनुसूचित जातियों की इस संख्या से दलितों की असल तादाद का अंदाज़ा नहीं होता. क्योंकि ये जातियां भी, समाज में ऊंच-नीच के दर्जे के हिसाब से तमाम उप-जातियों में बंटी हुई हैं.

यूं तो, भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों की ज़िंदगी को संचालित करने वाली ये ज़ातीय व्यवस्था पिछले क़रीब दो हज़ार सालों से ऐसे ही चली आ रही है. लेकिन, इस ज़ातीय व्यवस्था के भीतर जातियों का बंटवारा तकनीकी-आर्थिक तौर पर और सियासी उठा-पटक की वजह से बदलता रहा है. भारत के ग्रामीण समाज में तमाम जातियां अपनी जाति के पेशे करती आई हैं. लेकिन, देश के अलग-अलग हिस्सों में कई जगह दलित ज़ातियों की आबादी इतनी ज़्यादा हो गई कि उन्हें किसी ख़ास पेशे के दायरे में बांधकर रखना मुमकिन नहीं था. सो, नतीजा ये हुआ कि इन दलितों ने अपना अस्तित्व बचाने के लिए जो भी पेशा करने का मौक़ा मिला, उसे अपना लिया. जब भारत में मुस्लिम धर्म आया, तो ये दलित और दबे-कुचले वर्ग के लोग ही मुसलमान बने. जब यूरोपीय औपनिवेशिक का भारत आना हुआ, तो समाज के निचले तबके के यही लोग उनकी सेनाओं में भर्ती हुए.

जब ईसाई मिशनरियों ने स्कूल खोले, तो इन दलितों को उन स्कूलों में दाखिला मिला और वो ईसाई बन गए. हर मौके का फायदा उठाते हुए, वो औपनिवेशिक नीति की मदद से आगे बढ़े और इस तरह से दलित आंदोलन संगठित हुआ.

डॉक्टर भीमराव आम्बेडकर जैसे नेता इसी व्यवस्था से आगे बढ़े और उन्होंने दलितों की अगुवाई की.

सम्मान के लिए हिंदू धर्म छोड़ बौद्ध बने ऊना के दलित

दलित आंदोलन के फायदे

बीसवीं सदी की शुरुआत में दलितों की हालत, सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक तौर पर एक जैसी ही थी. गिने-चुने लोग ही थे, जो दलितों की गिरी हुई हालत से ऊपर उठ सके थे. डॉक्टर आम्बेडकर की अगुवाई में दलित आंदोलन ने दलितों को कई फ़ायदे मुहैया कराए.

इनमें आरक्षण और कानूनी संरक्षण जैसी सुविधाएं को गिनाया जा सकता है.

आज शासन व्यवस्था के हर दर्जे में कुछ सीटें दलितों के लिए आरक्षित होती हैं. इसी तरह सरकारी मदद से चलने वाले शैक्षिक संस्थानों और सरकारी नौकरियों में भी दलितों के लिए आरक्षण होता है.

क्रमशः

आधुनिक भारत व दलित... दलित साहित्य बौद्ध बनने से जीवन...

अर्थ व अवधारणा- दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है- दलन किया हुआ। इसके तहत वह हर व्यक्ति आ जाता है जिसका शोषण-उत्पीडन हुआ है। रामचंद्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में दलित का अर्थ लिखा है, मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ, विनष्ट किया हुआ। पिछले छह-सात दशकों में दलित पद का अर्थ काफी बदल गया है। डॉ भीमराव अम्बेडकर के आंदोलन के बाद यह शब्द हिंदू समाज व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर स्थित हजारों वर्षों से अस्पृश्य समझी जाने वाली तमाम जातियों के लिए सामूहिक रूप से प्रयोग होता है। अब दलित पद अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों की आंदोलनधर्मिता का परिचायक बन गया है। भारतीय संविधान में इन जातियों को अनुसूचित जाति नाम से जाना जाता है। भारतीय समाज में वाल्मीकि या भंगी को सबसे नीची जाति समझा जाता रहा है और उसका पारंपरिक पेशा मानव मल की सफाई करना रहा है। परन्तु आज के समय में इस स्थिति में बहुत बदलाव आया है। दलित का अर्थ शंकराचार्य ने मधुराष्टकम् में द्वैत से लिया है। उन्होंने दलितं मधुरं कहकर श्रीकृष्ण को संम्बोधित किया है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- भारत में दलित आंदोलन की शुरूआत ज्योतिराव गोविंदराव फुले के नेतृत्व में हुई। ज्योतिबा जाति से माली थे और समाज के ऐसे तबके से संबध रखते थे जिन्हे उच्च जाति के समान अधिकार नहीं प्राप्त थे। इसके बावजूद ज्योतिबा फूले ने हमेशा ही तथाकथित नीची जाति के लोगों के अधिकारों की पैरवी की। भारतीय समाज में ज्योतिबा का सबसे दलितों की शिक्षा का प्रयास था। ज्योतिबा ही वो पहले शख्स थे जिन्होंन दलितों के अधिकारों के साथ-साथ दलितों की शिक्षा की भी पैरवी की। इसके साथ ही ज्योति ने महिलाओं के शिक्षा के लिए सहारनीय कदम उठाए। भारतीय इतिहास में ज्योतिबा ही वो पहले शख्स थे जिन्होंने दलितों की शिक्षा के लिए न केवल विद्यालय की वकालत की बल्कि सबसे पहले दलित विद्यालय की भी स्थापना की। ज्योति में भारतीय समाज में दलितों को एक ऐसा पथ दिखाया था जिसपर आगे चलकर दलित समाज और अन्य समाज के लोगों ने चलकर दलितों के अधिकारों की कई लड़ाई लडी। यूं तो ज्योतिबा ने भारत में दलित आंदोलनों का सूत्रपात किया था लेकिन इसे समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का काम बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर ने किया। एक बात और जिसका जिक्र किए बिना दलित आंदोलन की बात बेमानी होगी वो है बौद्ध धर्म। ईसा पूर्व 600 ईसवी में ही बौद्ध धर्म ने हिंदू समाज के निचले तबकों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई। भगवान गौतम बुद्ध ने इसके साथ ही बौद्ध धर्म के जरिए एक सामाजिक और राजनीतिक क्रांति लाने की भी पहल की। इसे राजनीतिक क्रांति कहना इसलिए जरूरी है क्योंकि उस समय सत्ता पर धर्म का आधिपत्य था और समाज की दिशा धर्म के द्वारा ही तय की जाती थी। ऐसे में समाज के निचले तलबे को क्रांति की जो दिशा भगवान बुद्ध ने दिखाई वो आज भी प्रासांगिक है। भारत में चार्वाक के बाद भगवान बुद्ध ही पहले ऐसे शख्स थे जिन्होंने ब्राह्मणवाद, जातीवाद और अंधविश्वास के खिलाफ न केवल आवाज उठाई बल्कि एक दर्शन भी दिया। जिससे कि समाज के लोग बौद्धिक दास्यता की जंजीरों से मुक्त हो सकें। यदि समाज के निचले तबकों के आदोलनों का आदिकाल से इतिहास देखा जाए तो चार्वाक को नकारना भी संभव नहीं होगा। यद्यपि चार्वाक पर कई तरह के आरोप लगाए जाते हैं इसके बावजूद चार्वाक वो पहला शख्स था जिसने लोगों को भगवान के भय से मुक्त होने सिखाया। भारतीय दर्शन में चार्वाक ने ही बिना धर्म और ईश्वर के सुख की कल्पना की। इस तर्ज पर देखने पर चार्वाक भी दलितों की आवाज़ उठाता नज़र आता है।....खैर बात को लौटाते हैं उस वक्त जिस वक्त दलितों के अधिकारों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने लड़ाई शुरू कर दी थी।..वक्त था जब हमारा देश भारत ब्रिटिश उपनिवेश की श्रेणी में आता था। लोगों के ये दासता का समय रहा हो लेकिन दलितों के लिए कई मायनों में स्वर्णकाल था।

आधुनिक भारत व दलित अधिकार- आज दलितों को भारत में जो भी अधिकार मिले हैं उसकी पृष्ठभूमि इसी शासन की देन थी। यूरोप में हुए पुर्नजागरण और ज्ञानोदय आंदोलनों के बाद मानवीय मूल्यों का महिमा मंडन हुआ। यही मानवीय मूल्य यूरोप की क्रांति के आदर्श बने। इन आदर्शों की जरिए ही यूरोप में एक ऐसे समाज की रचना की गई जिसमें मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दी गई। ये अलग बाद है कि औद्योगिकीकरण के चलते इन मूल्यों की जगह सबसे पहले पूंजी ने भी यूरोप में ली।..लेकिन इसके बावजूद यूरोप में ही सबसे पहले मानवीय अधिकारों को कानूनी मान्यता दी गई। इसका सीधा असर भारत पर पड़ना लाजमी था और पड़ा भी। इसका सीधा सा असर हम भारत के संविधान में देख सकते हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना से लेकर सभी अनुच्छेद इन्ही मानवीय अधिकारों की रक्षा करते नज़र आते हैं। भारत में दलितों की कानूनी लड़ाई लड़ने का जिम्मा सबसे सशक्त रूप में डॉ? अम्बेडकर ने उठाया। डॉ अम्बेडकर दलित समाज के प्रणेता हैं। बाबा साहब अंबेडकर ने सबसे पहले देश में दलितों के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की पैरवी की।

क्रमशः

हर्ष के दोहे

गतांक से आगे

अपनी नींद बिसार के, सपने अपने देय।
हर्ष जिसे हो देखना, खुद आँखों रस लेय।।

लोग अपनी नींद छोड़कर अपने सपने दूसरे को देते हैं। बेहतर तो यह है कि व्यक्ति अपने सपने खुद देखे और उनके पूरा होने का आनन्द उठाये। दूसरों के दिये सपने भार भी हो सकते हैं।

हर्ष गुणीजन सौ बसें, मिले न सबको मान।
सीमा कुछ संजोग भी, जैसे परखी धान।।

हर बस्ती, नगर और प्रदेश में कई गुणीजन रहते हैं, लेकिन सभी को सम्मान और मान्यता नहीं मिल पाती। जैसे अनाज से भीरी बोरी में परखी से कुछ ही दानें हाथ में आते हैं उसी प्रकार संजोग और सीमा के कारण कुछ ही गुणीजनों को मान और मान्यता मिल पाती है।

चाँदी के बरतन पका, भात खाय धववान।
माटी की हांडी पके, वो ही हर्षा धान।।

धान तो एक ही है। धनी व्यक्ति उसे चाँदी के बर्तन में पकाकर खाता है और निर्धन मिट्टी की हांडी में पकाता है।

कांटों की खेती करे, कांटे रस्ते आंय।
फूलों की खेती करे, महक अणूती पाय।।

जो व्यक्ति कांटों की खेती करते हैं, उनके रास्ते में काँटे ही आयेंगे और जो लोग फूलों की खेती करते हैं, उनको भरपूर सुगंध मिलती है। यानि कुकर्म में लगे व्यक्ति को दुख और सुकर्म में लिप्त व्यक्ति को सुख मिलता है।

हर्ष सपेरा जानता, नागदंश की काट।
बिच्छू काटे का डरे, नाग परे जब आंट।।

जो सपेरा सांप काटने का इलाज जानता है और जिसकी अंटी में सांप पड़े होते हैं, वह भला बिच्छू के काटने से क्या डरेगा।

जैसी पीड़ा आपको, वैसी हर्ष शरीर।
घट मांहि इक आईना, स्व सम बरतो बीर।।

किसी भी व्यक्ति से व्यवहार करते समय यह बात ध्यान में होनी चाहिए कि जैसा शरीर मेरा है, वैसा ही शरीर सामने वाले का है और जैसी पीड़ा मुझको होती है, वैसी ही पीड़ा सामने वाले व्यक्ति को भी होगी। अत: अपने मन के दर्पण में झाँककर सामने वाले व्यक्ति को भी होगी। अत: अपने मन के दर्पण में झाँककर सामने वाले व्यक्ति से वैसा ही व्यवहार करो जैसा आप अपने लिए चाहते हो।

गुड़ की सी बातें करें, मतलबी चाटुकार।
पीठ परे निंदा करें, हर्ष न मीत हमार।।

जो व्यक्ति सामने मीठी-मीठी बातें बनाता है, मतलबी है, चाटुकार है और पीठ पीछे निंदा करता है, वह मेरा मित्र नहीं हो सकता।

झूठ के अंधड़ सौ चलें, लोक सुमेरुहि जान।
झूठ हवा से ना डिगे, सच लेता पहचान।।

लोक में झूठ के सौ अंधड़ भी चलें तो कुछ फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि, लोक को आप सुमेरु पर्वत समझिये जो झूठी हवा से नहीं हिलता और सच को पहचान लेता है।

पारस पारस ढूँढ़ते, पारस हर्ष प्यास।
ढूँढूत ढूँढूत पारखी, पारस परखी पास।।

ढूँढ़ने की प्यास लेकर व्यक्ति पारस ढूँढ़ता रहा और उसे ढूँढते-ढूँएते वह पारखी हो गया। सच है पारस तो दक्ष व्यक्ति के पास ही होता है।

परखी परखे धान को, ज्ञानी सार असार।
नीयत परखै मानवी, होते सही विचार।।

परखी से धान की जाँच होती है, ज्ञानी सार असार की जाँच करता है एवं नीयत से इंसान की परख होती है। जिसके सही विचार होते हैं वही व्यक्ति की पहचान कर पाता है।

क्रमशः

- हरदान हर्ष

मुख्यमंत्री से की अधिस्वीकृत पत्रकारों के साथ ही अनुभवी पत्रकारों को भी आवास देने की मांग

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से अधिस्वीकृत पत्रकारों के साथ ही अनुभवी पत्रकारों को भी आवास सहित अन्य योजनाओं में शामिल करने की मांग की है। पिंक सिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष अभय जोशी की अगुवाई में इस बाबत गुरुवार को पत्रकारों का प्रतिनिधि मंडल सूचना एवम् जनसंपर्क आयुक्त नीरज के पवन से मिला। जोशी ने आयुक्त को बताया कि आवास योजना में अधिस्वीकृत पत्रकारों के साथ पांच साल या उससे अधिक समय से पत्रकारिता में संलग्न पत्रकारों को भी शामिल किया जाए। इसके साथ ही पत्रकार पेंशन योजना की पात्रता आयु को घटा कर 58 साल की जाए। जोशी ने कहा कि मीडिया संस्थान पत्रकार को जब 58 साल की आयु में रिटायर कर देता है तो इस लिहाज से पत्रकार पेंशन योजना में भी आयु 58 वर्ष करना ही न्यायसंगत होगा। पत्रकार पेंशन राशि भी पांच हज़ार से अधिक करने कि मांग रखी। सूचना एवं जनसंपर्क आयुक्त नीरज के पवन से जोशी ने पत्रकारों के लिए बनाए गए अधिस्वीकृति के नियमों को भी सरलीकरण कर इसमें अधिक से अधिक पत्रकारों को अधिस्वीकृत करने की मांग रखी। आयुक्त ने सभी मांगों को मुख्यमंत्री के सामने रख कर समुचित कारवाई का भरोसा दिलाया।

रिजर्व सीटों पर पार्षद टिकटों में महिला एसटी-एससी व ओबीसी को तरजीह

जयपुर। बगैर चुनाव लड़े कोई भी व्यक्ति मेयर, अध्यक्ष व सभापति नहीं बन सकें, इसके लिए कांग्रेस के प्रदेश नेतृत्व ने संगठन पदाधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए है कि रिजर्व सीटों पर पार्षद टिकट में एसटी - एससी, ओबीसी और महिला आरक्षित श्रेणी प्रत्याशी के चयन के समय व्यापक जनाधार वाले योग्य और जिताऊ प्रत्याशी का पैनल फाइनल किया जाए। ऐसा करके 26 नवंबर को होने वाले मेयर चुनाव में कांग्रेस को हाइब्रिड फार्मूला लागू करने की जरुरत ही नहीं पड़े। इस तरह का पत्र संगठन के पदाधिकारियों और प्रभारी मंत्रियों को कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने लिखे है।

कांग्रेस में टिकट वितरण का दौर एक नवंबर के बाद से शुरू हो जाएगा। ऐसा इसलिए ताकि दावेदार 5 नवंबर की अंतिम तिथि तक पार्षद प्रत्याशी के रूप में पर्चा दाखिल कर सकें। जिन जगहों पर नाम फाइनल नहीं होगा, ऐसे में कई दावेदारों का नामांकन कराया जाएगा और उन्हीं में से एक को सिंबल अलॉट होगा। टिकट वितरण में सरकार के प्रभारी मंत्री और संगठन के पदाधिकारियों की सहमति से नाम तय होंगे। इससे पूर्व सभी पदाधिकारियों से नामों के बारे में चर्चा की जाएगी।

दस्तकार नगर योजना में महिला स्वयं सहायता समूह कर सकते हैं आवेदन

जयपुर। राजस्थान हाउसिंग बोर्ड की महात्मा गांधी दस्तकार नगर योजना में दस्तकारों के साथ अब महिला स्वंय सहायता समूह भी आवेदन कर सकते है। इसकों लेकर पिछले 2 दिन से हाउसिंग बोर्ड में कमिशनर स्तर पर बैठक भी हुई है। शुक्रवार को स्थानीय सीएलसी के पदाधिकारियों के साथ बैठक के उपरांत ही राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त बाडमेर की रूमा देवी ने भी कमिशनर पवन अरोड़ा के साथ भेंट की। बोर्ड कमिशनर ने योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान रूमा देवी ने 10 कारगर महिला स्वंय सहायता समूहों को पंजीकृत करने में रूचि दिखाई है। शनिवार को रूमा देवी बोर्ड अधिकारियों के साथ नायला स्थित दस्तकार नगर योजना को देखने जाएगी।

इस योजना से संबंधित बैठक के लिए बोर्ड कमिशनर अरोड़ा ने रूमा देवी को बुलाया था। बोर्ड कमिशनर पवन अरोड़ा ने बताया कि बैठक में महिला सहायता समूह से रूमा देवी को भी जयपुर बुलाया गया और उनके साथ भी बैठक की गई । सुबह मौका निरीक्षण करने के लिए रूमा देवी मौके पर जाएगी। सीएलसी पदाधिकारी योजना को देखकर आए है । इनमें काफी उत्साह है। इस योजना में 750 केपेसिटी का ऑडिटोरियम भी तैयार किया जाएगा। बोर्ड की प्लानिंग है कि इसके संचालन की जिम्मेदारी भी किसी स्वंय सहायता समूह को ही दे दी जाए। अभी तक 110 लोगों ने पंजीकरण करवा लिया है। राजस्थान हाउसिंग बोर्ड ने महात्मा गांधी दस्तकार नगर योजना में पंजीकरण की तिथि 21 नवंबर तक बढा दी है। पहले इस योजना में पंजीकरण 2 अक्टूबर से शुरू था जिसकी अंतिम तिथि 1 नवंबर तक थी। आगरा रोड नायला स्थित दस्तकार नगर में निर्मित 660 आवासीय इकाई मय कार्यशाला है। हाउसिंग बोर्ड अगले सप्ताह दस्तकारों की सुविधा के लिए खजाने वालों का रास्ता व सुभाष चौक क्षेत्र में दस्तकार नगर के आवेदन पत्र भरवाने के लिए शिविरों का आयोजन करेगा।

हैल्थ टिप्स

- रात को सोते समय शरीर के खुले भाग पर हल्का-सा लोंग का तेल लगाने से मच्छर सदैव दूर रहते हैं तथा काटते नहीं हैं।
- लवंग के दो ग्राम जो कूट किये हुये चूर्ण को 125 मि.ली. पानी में उबाले, चौथा भाग शेष रहने पर उतार छानकर थोड़ा गर्म पानी पी ले। यह कफ को पतला कर, शरीर से निकाल देने में अति उत्तम है।
- आधा कप अनार के रस में एक छोटी इलायची के पिसे दाने और चौथाई चम्मच पिसी सोंठ मिलाकर पीने से मूत्र अवरोध दूर होता है।
- हींग के सेवन से पेट की वायु, गैस, अफारा दर्द आदि का नाश होता है।
- यदि नाक में संक्रमण हो गया हो तो हींग को गर्म पानी में घोलकर दो-दो बूंद नाक में टपकायें।

देश की आजादी, एकता और अखण्डता के लिए पटेल, गांधी व नेहरु के संघर्ष की आत्मा एक, सोच एकः प्रताप सिंह खाचरियावास

जयपुर। परिवहन मंत्री श्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि देश गांधी-पटेल और नेहरू जैसे कुशल नेतृत्व में अंग्रेजों

की दासता से आजाद हुआ तथा 500 से अधिक रियासतों से मिलकर 'एक राष्ट्र' बना लेकिन अब इस एकता को बनाए रखने और देश की तरक्की के लिए हर नागरिक को भारत बनकर सोचना होगा।

श्री खाचरियावास गुरूवार को लौह पुरूष और भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की 144वीं जयन्ती 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के मौके पर जिला प्रशासन एवं पुलिस विभाग की ओर से आयोजित 'रन फोर यूनिटी' के अवसर पर सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आजादी मिलने के बाद प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को रियासतों के एकीकरण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई और उन्होंने ज्यादातर रियासतों को प्रेम और समझाइश से हैदराबाद, जूनागढ जैसी रियासतों को नीति और शक्ति से भारत राष्ट्र बनाया। परिवहन मंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी को उनके शहादत दिवस पर याद करते हुए कहा कि श्रीमती गांधी सच्चे अर्थों में एक ऐसी आयरन लेडी थी जिसने बांग्ला देश के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। उनका बलिदान देश को वह मजबूती देकर गया है। उनके बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। उन्होंने स्वयं को देश पर कुर्बान कर दिया। इस अवसर पर परिवहन मंत्री ने सभी उपस्थित लोगों को एकता एवं अखण्डता की शपथ भी दिलाई। संभागीय आयुक्त श्री के.सी.वर्मा ने 'रन फॉर यूनिटी' जैसे आयोजनों को राष्ट्रवाद की भावना के लिए अच्छा प्रयास बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन हर नागरिक में खास तौर पर युवाओं में नए जोश का संचार करते हैं। जिला कलक्टर श्री जगरूप सिंह यादव ने कहा कि बहुलतावादी संस्कृति भारत की पहचान है जिसमें अपनी सांस्कृतिक विलक्षणता और विशिष्टता रखते हुए भी भारत एक देश है। इस संदेश को रन फॉर यूनिटी जैसे कार्यक्रमों के जरिए अधिक से अधिक प्रचारित किया जाना चाहिए ताकि भारतीय समाज एवं संस्कृति का वर्टिकल और हॉरिजॉन्टल विभाजन करने की कोशिश करने वालों को परास्त किया जा सके। ऐसे आयोजन बताते हैं कि भारत एक था, एक है और एक ही रहेगा। श्री यादव ने देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री को याद करते हुए कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी इस देश को शक्तिशाली बनाने, अक्षुण्ण रखने और इसकी एकता के लिए लगातार काम किया और अंत में इसी के लिए ही अपना बलिदान दे दिया। इस अवसर पर पुलिस आयुक्त श्री आनन्द श्रीवास्तव, अतिरिक्त आयुक्त द्वितीय श्री अजयपाल लाम्बा, पुलिस उपायुक्त यातायात श्री राहुल प्रकाश, पुलिस उपायुक्त पूर्व डॉ.राहुल जैन सहित पुलिस एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर राजीव पाण्डेय, एसडीएम श्रीमती ओम प्रभा समेत जिला प्रशासन के कई अधिकारी मौजूद थे।

शंखनाद के साथ प्रारम्भ हुई 'एकता की दौड़'-चरम पर दिखा उत्साह

परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास एवं विधायक श्री रफीक खान समेत अन्य विशिष्ट अतिथियों ने हरी झण्डी दिखाकर दौड़ को रवाना किया। दौड़ से पूर्व मंच से शंखनाद कर प्रतिभागियों का हौंसला बढाया गया। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स, पुलिसकर्मी, सिविल डिफेंस कर्मी, खिलाड़ी, स्कूली विद्यार्थी एवं आमजन ने दौड़ में हिस्सा लिया। परिवहन मंत्री श्री खाचरियावास, विधायक श्री रफीक खान, संभागीय आयुक्त, जिला कलक्टर, पुलिस आयुक्त, अतिरिक्त आयुक्त ने भी दौड़ में हिस्सा लिया।

राजधानी जयपुर को गर्माहट का अहसास कराने वाला तिब्बती बाजार शुरू

जयपुर। 35 साल से राजधानी सहित प्रदेशभर के लोगों को सर्दी में गर्माहट का अहसास कराने वाले तिब्बती व्यापारियों का बाजार एक नवंबर से शुरू हो गया। लगातार दूसरी साल बाजार वीटी रोड मानसरोवर पर लगा है, जो कि 10 फरवरी तक रहेगा।

तिब्बती मार्केट व्यापार संघ की अध्यक्ष लामो के मुताबिक मार्केट में 250 व्यापारियों ने अपने बेहतरीन कलेक्शन के साथ स्टॉल लगाई है। महिलाओं के लिए खास तौर पर ऊनी कुर्तियां, लोंग कार्डियन, शॉर्ट जैकेट, पचमीना-रेंबो शॉल के साथ ही जेंट्स के लिए कई वैरायटी की जैकेट (अच्छे लेदर वाली भी), जींस और स्वेटर की आकर्षक वैरायटी मौजूद है। इसके साथ ही छोटे बच्चों से लेकर बुजर्गों तक हर तरह की कीमत में गर्म कपड़ों का भंडार है। बाजार का समय सुबह 8 से रात 10 बजे तक रहेगा।

मार्केट आने वालों के लिए पर्याप्त पार्किंग के साथ ही पीने का मिनरल वाटर, बाथरूम जैसी सुविधाएं मुहैया कराई गई है। बाजार का समय सुबह 8 से रात 10 बजे तक रहेगा। खास बात यह है कि बाजार हर बार की तरह एक समान दरों पर रहेगा।

सचिवालय... (पृष्ठ 1 का शेष)

गांधी दर्शन म्यूजियम भी बनाया जाएगा। गहलोत ने अपने बजट भाषण में महात्मा गांधी के आदर्शों को आत्मसात करने की जरूरत बताई। यह विभाग प्रदेश में गांधी के संदेश को प्रदेश के निचले स्तर तक पहुंचाने और आपसी भाईचारे को बढ़ाने के लिए काम करेगा। कला व संस्कृति विभाग इसका मूल विभाग होगा। इसके साथ ही गुजरात के साबरमती आश्रम की तर्ज पर प्रदेश में गांधी संग्रहालय और आश्रम स्थापित करने को लेकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पहल की है। गांधी संग्रहालय व आश्रम बनाने को लेकर अधिकारियों की टीम गठित की गई। स्वायत्त शासन और कला व संस्कृति विभाग इस संग्रहालय बनाने के काम को देखेगा।

श्री बाबा समाचार पत्र के विशिष्ठ सदस्य बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं

श्री गिरधारी लाल बैरवा
व्याख्याता (वाणिज्य)
लालसोट, दौसा

श्री लच्छुराम रेसवाल
से.नि. ए.ए.ओ.
सांगानेर, जयपुर

श्री भूपेन्द्र सिंह
धन्ना तलाई, टोंक

श्री मनीष कुमार सैनी
कोटपूतली, जयपुर

स्वामीत्व, मुद्रक, प्रकाशक, रजनी के लिए एम.बी. प्रिन्टर्स एफ-76 ए, करतारपुरा इण्ड. एरिया मोरानी वर्क्सशॉप के पास जयपुर से मुद्रित एवं सी-57, महेश नगर, 80 फीट रोड, जयपुर-15 (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-भवनेश धावनिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। मो.-9928260244, 9829271582 E-mail : shreebaba_2008@yahoo.com